राजा था। बरेली (उ० प्रदेश) क्षेत्र से अच्यु नामक राजा के सिक्के प्राप्त होते हैं के साथ युद्ध हुआ। नागसेन नागवंशी राजा जो पद्मावती क्षेत्र में (ग्वालियर) शासन करता था। उसके साथ युद्ध हुआ और तीसरा कोतवंशी राजा को समुद्रगुप्त ने हराया था। दिल्ली और पूर्वी पंजाब क्षेत्र से 'कोत' नामक सिक्के प्राप्त होते हैं। ये तीनों राजाओं को एक ही युद्ध में समुद्रगुप्त हराया था या तीनों को अलग-अलग युद्ध में हराकर विजय प्राप्त की थी इसका पूर्ण विवरण हमें प्राप्त नहीं होता है। इस युद्ध को आर्यावर्त का प्रथम युद्ध कहा गया है।

सम्पूर्ण दक्षिण भारत को दो भागों में विभक्त किया गया है एक 'दक्षिणापथ' जो उत्तर में विंध्य पर्वत से लेकर दक्षिण में कृष्णा एवम् तुंगभद्रा नदी तक का प्रदेश और इस नदी के दक्षिण के प्रदेश को 'सुदूर दक्षिण' का भाग कहा गया। प्रयाग प्रशस्ति के 19 वें - 20 वें पंक्तियों से दक्षिणापथ के 12 राजाओं की जानकारी मिलती है जिससे समुद्रगुप्त का युद्ध हुआ जिसमें ये राजा ~~समकक्ष~~ हार गये। इसी लेख के 23वीं पंक्ति में कहा गया है कि उन्मूलित राजवंशों को

व्याख्यान जारी / continue

पहुँचते हैं कि कॉच ही समुद्रगुप्त है ~~क्योंकि~~ जिसका प्रारम्भिक नाम कॉच था लेकिन जब इसका साम्राज्य ~~समुद्रतट की~~ सीमा ~~सीमाओं~~ को छुने लगा तो ~~इसे~~ अपना नाम कॉच से समुद्रगुप्त कर लिया। क्योंकि इन दोनों के जो सिक्के प्राप्त होती है उसमें काफी समानताएँ हैं मुद्रालेख 'सर्वराजोच्छेता' का प्रयोग सिर्फ समुद्रगुप्त के लिए हुआ है और यही शब्द संग्रह कॉच के भी मुद्राओं पर है इसलिए भी ऐसा माना जाता है कि कॉच कोई दूसरा गुप्त शासक नहीं बल्कि समुद्र गुप्त है उत्तराधिकार का युद्ध ~~हुआ~~ के विषय में एक निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकते लेकिन यह तो निश्चित है कि यदि समुद्रगुप्त के साथ ~~उत्तराधिकार~~ का उत्तराधिकार का युद्ध हुआ भी तो उसमें समुद्रगुप्त को निश्चित रूप से सफलता मिली।

अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के पश्चात समुद्रगुप्त अपना विजय अभियान ~~प्रारम्भिक~~ प्रारम्भ किया। आर्यावर्त के प्रथम युद्ध में समुद्रगुप्त ने उत्तर भारत के तीन शक्तियों को ~~प्र~~ पराजित किया। जिसका विवरण प्रयाग प्रशस्ति के 13वे-14वे पंक्तियों में मिलता है। अहिच्छत्र के राजा 'अच्युत' जो एक नाग वंशी

Scanned with CamScanner

Dr. Bibhuti Bhushan,

प्रयाग प्रशस्ति के आधार पर समुद्रगुप्त की उपलब्धियों का शेष व्याख्यान। (3)

क्योंकि इस लेख में उसकी मृत्यु की तिथि अंकित नहीं है तथा लेख के अंत में कहा गया है कि ~~स्वयं~~ यह रचना उस व्यक्ति की है जो परमभट्टारक का दास था। इस लेख में समुद्रगुप्त ~~मुक्त~~ के जीवन की उपलब्धियों का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है। यदि समुद्रगुप्त का यह लेख छोड़ दें तो उसके बारे में हमारी जानकारी अधूरी रह जाएगी।

प्रयाग प्रशस्ति के ~~चौथे~~ श्लोक से समुद्रगुप्त को गुप्त वंश के उत्तराधिकारी चुने जाने का विवरण प्राप्त होता है। चन्द्रगुप्त-I ने सभासदों की भरी ~~सभा~~ सभा में समुद्रगुप्त को गले लगाकर कहा कि पुत्र तुम योग्य हो, पृथ्वी का पालन करो। इस घोषणा से राजकुल के अन्य राजकुमार दुःखी हुए। इस विवरण के आधार पर ही कुछ विद्वान इतिहासकारों का मानना है कि समुद्रगुप्त को उत्तराधिकारी चुने जाने पर अन्य राजकुमार इसका विरोध किया। जिसका नेतृत्व काच नामक राजकुमार कर रहा था, जिसके कुछ सिक्के भी प्राप्त होते हैं ~~सिक्के~~ इन सिक्के के अग्रभाग पर राजा की आकृति और मुद्रालेख - काच पृथ्वी को जीतकर अपने उत्तम कर्मों द्वारा स्वर्ग को जीतेगा। एवम् पृष्ठ भाग पर 'सर्वराजोच्छेत्ता' (समस्त राजाओं का क्षय करने वाला) मुद्रालेख अंकित है। समस्त प्रमाणों के आधार पर इतिहासकार इस नतीजे पर

Scanned with CamScanner